

धस् (von 1. धा) in गो°, पुरा°, रेतो°, वयो°.

1. धा, दधाति *Daātor*. 25, 10. P. 6, 1, 190. धत्थस् धत्तस् 8, 2, 38. दध्मस्, दध्मसि, धत्थे, दधति (P. 7, 1, 4. 6, 1, 189) und दधति (RV. 7, 56, 19); अदधात्, अधत्तम्, अदधात्, अदधुस् (समादधन् MBu. 3, 12706); conj. दधस्, दधत् (P. 7, 3, 70, Sch.), दधात् (Pat. zu P. 7, 3, 70), दधयस्, दधाम, दधन्; धत्ति (P. 6, 4, 119. Vop. 10, 10, 12), धत्ताम् 2. sg., दधात्, धत्तम्, धत्ताम्, धत्तं, धत्तैः und दधात्, दधातन (P. 7, 1, 45, Sch.), दधत् (P. 7, 1, 4) und दधत् (RV. 7, 62, 6); दध्यात्; partic. दधत्, दधती; दधो, दधाय, दधिमै, दधे. दधुस्, दध्युषो (R. 2, 16, 20); aor. अधात् (P. 2, 4, 77. Vop. 8, 25), अधाताम्, धाम्, धास्, धात्, धाति, (प्रति) धत्, धुस्; imper. aor. धातु (P. 6, 1, 8, Vārt. 1. 3), धात, धातु; pot. aor. धायीस्, धयाम्, धयुस्, (अभि, नि) धेतन (विधेम s. u. विधे); धास्यस् (2. du.) RV. 1, 160, 5. धास्य (2. pl.) 111, 2. धासुस् 7, 97, 5; धास्यति, अधास्यत्; धाता; prec. धेयात् P. 6, 4, 67, Sch.; med. धे 1. sg., धेतसे (P. 8, 2, 38. धसे conj. P. 3, 4, 96, Sch.), धेतै und धेयै (दधेतै), दधौवे, दधौते (दधेतै). दधिये, दधेतै; अधत्थास्, अधत्त; दधिये und धत्स्व (P. 8, 2, 38), धद्धम् (P. 8, 2, 38), दधताम् 3. pl.; दधितै und दधीत, दधीमहि; aor. अधियास्, अधित (P. 1, 2, 17. Vop. 10, 12), धेये (RV. 1, 158, 2), धेये (6, 67, 7), अधोताम् (10, 4, 6), अधीमहि, धीमहि, धौमहे, धिरे; imper. aor. धिये (P. 7, 4, 45); pot. aor. धिषोय (P. 7, 4, 45); perf. दधे, दधिये, दधिरे und दधे (RV. 10, 82, 5. 6. P. 6, 4, 76, Sch.); धिये (RV. 1, 56, 6. 70, 5. 10, 21, 3), धिष्य und धिरे könnten auch als perf.-Bildungen mit abgefallener Reduplication angesehen werden; धास्ये; inf. धातुम्, धातवे, धियैधियै (RV. 7, 34, 24), प्रतिधाम्; धिवा (Çat. Ba. 1) und क्तिवा (P. 7, 4, 42), °धाय (P. 6, 4, 69); pass. धीर्यते (P. 6, 4, 66), अधायि (P. 7, 3, 33, Sch.), धायि, अधायिषाताम् und अधिषाताम्, धायिषीष्ट und धासीष्ट P. 6, 4, 62. Siddh. K. 108, b, 4, 5; partic. धित (Hariv. 7799 und in इधित, नेमधित, मित्र°, वसु°) und später क्त (s. d. bes.) P. 7, 4, 42. Vop. 26, 122; 1) setzen, legen, stellen; setzen —, legen in, auf (loc.); act.: इमं त्रीवेभ्यः परिधिं दधामि RV. 10, 18, 4. दधो यत्केतुमुपमं समत्सु 7, 30, 3. साधंमृतेन धियं दधामि 34, 8. धाट्याम्, निविदम् einsetzen Ait. Br. 2, 33, 4, 1. Çat. Ba. 1, 4, 1, 37. 13, 5, 1, 9. अवाप्तोस्तत्तत्किरितौ धत्ता अन्धान् (vgl. übrigens die v. 1. AV. 10, 7, 42) TBr. 2, 3, 5, 3. — तं वो जम्मे दध्मः AV. 3, 27, 1. कृत्वाहिं जिह्वामदधात् 10, 2, 7. गर्भं जगतीषु धत्थः RV. 1, 157, 5. तस्मिन्गर्भं दधाम्यकम् Buag. 14, 3. पयं उन्निषायामधत्तम् RV. 1, 180, 3. तान्वायुरात्मानि धिवा Çat. Br. 14, 6, 2, 2. विज्ञातदोषेषु दधाति दण्डम् den Stock auf Jmd legen so v. a. Strafe über Jmd verhängen MBu. 5, 1075. दण्डं च मे धास्यति R. 5, 28, 7. मम व्रते ते हृदयं दधामि Pār. Gran. 2, 2. med.: दर्शते कलशानामधीमहि RV. 4, 32, 19. तं दिवो धरुणं धिष्यो अज्ञसा 1, 86, 6. अग्ने मय्युं डुर्विद्वस्य धीमहि 10, 33, 4. अमे विश्वा अधिया इन्द्र कृष्णीः setzen oder versetzen in 4, 17, 7. 2, 34, 9. pass. gesetzet —, gestellt —, geordnet —; ausgesetzt werden: निःशङ्कं धीयते लोकिः पश्य भस्मचये पदम् Hir. II. 163. (कराम्बुजम्) यज्ञ-दधायि सात्वताम् (मूर्ध्नि) Buag. P. 5, 18, 23. विशामधायि विष्यतिङ्गुराणे RV. 7, 7, 4. 3, 5, 3. इन्द्राग्नेन्द्राय धीयते। विष्यानां वसताविष्य 9, 62, 15. एष स्तोमो मूक उग्राय वाहे धुरीणाया न वाजपयधायि 7, 24, 5. न ते अस्तः शर्व-सो धाट्यस्य 6, 29, 5. धूर्जवे धीयते धनी 1, 81, 3. प्राचीन् रेतो धीयते von hinten nach vorn wird der Same eingebracht TS. 2, 5, 3, 3. liegen in, enthalten sein in: एवं सर्वमहिंसाया धर्मार्थमपि धीयते MBu. 12, 8933. — 2) hinbringen zu, hinschaffen zu (loc.); act.: इमं नौ यज्ञमन्तेषु धेहि

RV. 3, 21, 1. 2, 9. दिवि रौचनान्यधत्तम् 1, 93, 5. तत्र वा देवः संविता दधात् 10, 17, 4. AV. 9, 5, 10. स्त्रियमन्यत्र दधत्पुमसु दधदिह 6, 11, 3. इह वा धेयुर्करयः RV. 3, 50, 2. ऋर्विषोक्तं धत्तात् 8, 1. Çat. Ba. 14, 5, 5, 6. ग्रीवासु तदण्डं दध्यात् damit hängt er dem Halse einen Kropf an Ait. Ba. 1, 25. — 3) Jmd an einen Ort oder in einen Zustand versetzen, Jmd verhelfen zu, bringen in, — zu (loc. dat.); act.: अस्मां अमृतत्वे दधातन RV. 5, 33, 4. 1, 31, 7. यावापृथिवी अमे धाः 63, 1. स्तोतारं मधवा वसौ धात् 4, 17, 3. (तम्) व्रजस्य साता गोमती दधाति 6, 10, 3. अनागास्त्वे अदि-तिवे तुरासं इमं यज्ञं दधतु ओषमाणाः 7, 51, 1. अरुणो अग्न्य सुविदे दधात् TBr. 3, 1, 2, 3 in Z. f. d. K. d. M. 7, 271. — मार्किनी डुरिताय धायोः RV. 1, 147, 5. मा नो ऽकिंभूयो रिपे धातु 5, 41, 16. रिपे देवो धिषणा धाति देवम् 7, 90, 3. ता न ऊर्जे दधातन 10, 9, 1. स्वश्च नो मधवन्सातये धाः lass uns erlangen 3, 31, 19. med.: ये वा निदं धिरे दृष्टवैर्यम् 2, 23, 14. गोभिर्मिमितुं धिरे सुवारिमिन्द्रं ज्यैष्ठ्याय धायसे गुणानाः 3, 50, 3. veranlassen zu: इन्द्रं वाणीः सत्रा राजानं धिरे सद्ध्यै 7, 31, 12. 6, 67, 7. — 4) richten auf (dat.), act.: देवो अरुणे दधति RV. 7, 36, 9. 104, 2. richten nach, an (loc.); med.: कुत्रा चिन्त्यामं दधाना 69, 2. पूत्रा चरयं दधे 8, 33, 8. ऊर्ध्वं दधाना धियम् 4, 144, 1. भूतिणि हि ते धिरे अनाकार्ये देवस्य ययवो ज-नासः 3, 19, 4. ये अग्रा धिरे डुर्वः 4, 8, 6. मरुतुं वा धीमहि स्तोमं यज्ञं च 5, 32, 4. मरुद्वो वृजने मन्मं धीमहि 10, 66, 2. नमस्तुभ्यं भगवते वासुदेवाय धीमहि Buag. P. 6, 16, 18. 3, 28, 1, 5, 37. मनस्, मातस् seinen Geist, seine Gedanken auf Jmd oder Etwas richten, beschliessen; act. und med.: धर्मे दध्यात्सदा मनः M. 12, 23. रूद्राय धिरे मनः MBu. 13, 1379. धास्ये मनो भगवते मृदं तत्कोर्तनादिभिः Buag. P. 6, 2, 38. निवेशाय मनो दधुः MBu. 3, 2535. R. 1, 9, 40. वयायास्य मनो दधे MBu. 3, 630. 3, 5949. Buag. P. 3, 12, 49. दधुः कुमारानुगमे मनोसि Buatt. 3, 11. पाञ्चालानां प्रसुप्तानां वधं प्रति मनो दधे MBu. 1, 567. यष्टु मनो दधे R. 1, 11, 1. शिशावस्मिन्नेताः — दध्याशाम् richten die Hoffnung auf Kathās. 3, 17. लक्ष्ये समाधिं न दधे die Aufmerksamkeit richten auf Buatt. 2, 7. pass.: कथं त्यक्तं गु-णारामं रामं मे धीयते मतिः wie kann ich daran denken zu R. Gorra. 2, 34, 18. न नाशमधिगच्छेयुरिति मे धीयते मतिः der Meinung bin ich MBu. 4, 920. 3, 8290. 12402. धीयमान und धित viell. dessen Sinn auf Etwas ge-richtet ist: अधर्मे धीयमानस्य सद्विस्तत्र निवारणम् Hariv. 1854. पतिभ-न्तै धिताः स्म 7799. — 5) Jmd (loc. dat. gen.) Etwas bestimmen, ver-leihen, zuteilen, verschaffen, geben, schenken; act.: दत्तं दधाति सोमिनि RV. 7, 32, 12. यदिन्द्रे प्रुम्मदधाता वसिष्ठाः 33, 4. यस्मिन्वयं दधिमा श-सिमिन्द्रे 10, 42, 6. तदासु सर्वासु मिथुनं दधाति Ait. Br. 3, 47. राष्ट्रं त्राये धास्यामि Çat. Ba. 12, 9, 3, 2. तत्र एव तद्यशो दधाति (ब्राह्मणाः) 14, 4, 3, 23. (कश्चित्) शतमस्मासु धास्यति MBu. 7, 5267. fg. वयो दधत्पदते RV. 1, 140, 9. 116, 8. अस्मे शतं शूरदौ जावते धाः 3, 36, 10. दधाति रत्नं विद्यते 4, 12, 3. धत्तं सूरिभ्य उत वा स्वययम् 1, 180, 9. सुवन्ति सोमं दधति प्रयासि 3, 30, 1. धातो रयिम् 34, 13. स नो दधाद्ब्रह्माप्ययम् Çvetāçv. Up. 6, 10. तत्र ते ऽकम् — श्रेयो धास्यामि यत्परम् MBu. 3, 2618. किंवाहिंके मृदुक्त्रे धर्मा-धर्मावृत्तान्ते। ययस्य सो ऽदधात्सर्गे तत्तस्य स्वयमाविशेत्॥ M. 1, 29. med.: दमे दमे सत रत्ना दधानः RV. 5, 1, 5. 6, 74, 1. यः संमानं सदा धत्ते भृत्यानां क्षिति-यो ऽधिकम् Pār. II, 22. pass.: प्रेष्टो अस्मा अधायि स्तोमः RV. 7, 34, 14. 1. 171, 2. (तस्मै) शर्मं धिरे पुत्राणि 2, 23, 5. 3, 51, 6. 8, 63, 7. अधायि धीतिरसम्प्र-मंशः 10, 31, 3. वाक्पतंगाय धीयते 189, 3. — 6) einsetzen als, bestimmen zu.